TEACHERS OF BIHAR
The change maker

Reg. No. BR/2025/0487469

पद्यपंकज

बिहार के शिक्षकों द्वारा रचित

अगस्त 2026 | अंक 24

ई-पत्रिका तक
पहुँचने हेतु QR
कोड को स्कैन करें

मासिक कविता संग्रह

पद्यपंकज काव्य संग्रह

अस्वीकरण

- पद्यपंकज मासिक पत्रिका जिसे टीचर्स ऑफ़ बिहार के तरफ़ से प्रकाशित किया जा रहा है। इस प्रकाशन में बिहार के शिक्षकों द्वारा स्वरचित कवितायें प्रकाशित हैं।
- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।
- इस पुस्तक का विक्रय नहीं किया जा सकता है। यह केवल पढ़ने के उद्देश्य से निःशुल्क उपलब्ध है।
- यह कविता 'Teachers of Bihar' की संपत्ति है। इसे किसी भी प्रकाशक या अन्य लेखक द्वारा उपयोग नहीं किया जा सकता है।
- पत्रिका के सभी लेख, चित्र और सामग्री के अधिकार लेखक और प्रकाशक के पास सुरक्षित हैं।
- पत्रिका के किसी भाग को बिना पूर्व अनुमति के पुनः प्रकाशित या वितरित नहीं किया जा सकता है।

संपादक मंडल

संरक्षक

डॉ० चन्दन श्रीवास्तव
सहायक आचार्य (शिक्षा), काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी
एवं
शैक्षिक समन्वयक,
भारतीय भाषा समिति, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार

संपादक

अनुपमा प्रियदर्शिनी
रा० उ० मध्य विद्यालय, दूधहन, रघुनाथपर, सिवान

सह-संपादक

मधु कुमारी
प्रा०वि०बाँधकट्टा
आजमनगर कटिहार

अमितेष कुमार
राजकीय बुनियादी विद्यालय रेपुरा प्रखंड सकरा जिला
मुजफ्फरपुर बिहार

तकनीकी सहयोग

ई ० शिवेंद्र प्रकाश सुमन

मार्गदर्शक

शिव कुमार
उत्क्रमित मध्य विद्यालय
नारायणपुर, बिक्रम, पटना

संरक्षक का संदेश

प्रिय साथियों,

बिहार के शिक्षकों द्वारा सृजित मासिक काव्य-संग्रह 'पद्यपंकज' का प्रत्येक अंक साहित्यिक संवेदनाओं, सृजनात्मक चिंतन और मानवीय मूल्यों का अनुपम संगम प्रस्तुत करता है। इसमें प्रकाशित प्रत्येक रचना केवल शब्दों का संयोजन मात्र नही, बल्कि रचनाकारों के अंतर्मन की अनुभूतियों, जीवन-दृष्टि, सामाजिक सरोकारों तथा सांस्कृतिक चेतना का सजीव प्रतिबिंब है। यह संग्रह न केवल सृजनशील शिक्षकों की साहित्यिक प्रतिभा को अभिव्यक्ति प्रदान करता है, बल्कि साहित्य के माध्यम से समाज में सकारात्मक विचारों और संवेदनशीलता का भी प्रसार करता है।

मुझे अत्यंत प्रसन्नता है कि 'पद्यपंकज' प्रत्येक अंक के साथ निरंतर नए रचनाकारों को अपने साथ जोड़ते हुए विविध विषयों पर भावपूर्ण, मौलिक एवं उत्कृष्ट काव्य-रचनाओं का प्रकाशन कर रहा है। यह निरंतरता इस बात का प्रमाण है कि शिक्षकों के भीतर निहित साहित्य-साधना की ज्योति आज भी पूर्णसमर्पण और ऊर्जा के साथ प्रज्वलित है।

निस्संदेह, ये रचनाएँ पाठकों के हृदय में गहन संवेदनाओं का संचार करेंगी और उन्हें आत्मिक संतोष का अनुभव कराएँगी।

मैं इस अंक में अपनी रचनात्मक अभिव्यक्ति देने वाले सभी शिक्षक-कवियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ देता हूँ। साथ ही, इस कृति के प्रकाशन में समर्पित भाव से योगदान देने वाले संपादकमंडल, सहयोगियों तथा समस्त पाठकों के प्रति भी अपनी हार्दिक शुभेच्छाएँ व्यक्त करता हूँ।

मेरी मंगलकामना है कि 'पद्यपंकज' इसी प्रकार साहित्य-साधना के इस पावन अभियान को निरंतर आगे बढ़ाता रहे, नई प्रतिभाओं को मंच प्रदान करता रहे तथा अपनी सृजनात्मक यात्रा के माध्यम से समाज में संवेदनशीलता, मानवीय मूल्यों और साहित्यिक चेतना का प्रकाश फैलाता रहे।

सभी रचनाकारों, पाठकों एवं साहित्य-प्रेमियों को मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

सादर,

चंदनश्रीवास्तव

डॉ० चन्दन श्रीवास्तव

सहायक आचार्य (शिक्षा),
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी
एवं
शैक्षिक समन्वयक,
भारतीय भाषा समिति, शिक्षा मंत्रालय,
भारत सरकार

शुभकामना संदेश

TEACHERS OF BIHAR THE CHANGE MAKERS

"पद्यपंकज" जैसी पत्रिका शिक्षकों की उस रचनात्मकता और सोच को सामने लाती है, जो अक्सर उनके पाठ्यक्रम और जिम्मेदारियों के बीच छिपी रह जाती है। यह जानकर बहुत खुशी हुई कि हमारे शिक्षकगण, अपनी व्यस्त दिनचर्या के बीच भी साहित्य और लेखन के प्रति इतनी संवेदनशीलता और समर्पण दिखा रहे हैं।

यह पत्रिका सिर्फ शब्दों का संग्रह नहीं है, बल्कि यह एक जीवंत दस्तावेज़ है, जो शिक्षा, विचार और भावनाओं के मेल से बना है। इसमें छपी हर रचना, एक शिक्षक के अनुभव, उसकी सोच और समाज के प्रति उसकी जिम्मेदारी को दर्शाती है।

"पद्यपंकज" की पूरी टीम, संपादक मंडल और इसमें सहयोग देने वाले सभी शिक्षकों को मेरी ढेरों शुभकामनाएँ। उम्मीद करती हूँ कि यह प्रयास यूँ ही आगे बढ़ता रहे और नई पीढ़ी को एक जिम्मेदार नागरिक बनने के लिए प्रेरित करता रहे।

13/04/25

डॉ. रश्मि प्रभा

पूर्व संयुक्त निदेशक

राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद, बिहार

शुभकामना संदेश

TEACHERS OF BIHAR THE CHANGE MAKERS

“पद्यपंकज” जैसी रचनात्मक पहल यह सिद्ध करती है कि शिक्षक न केवल ज्ञान के दीप प्रज्वलित करते हैं, बल्कि समाज की सांस्कृतिक चेतना को भी जीवंत बनाए रखते हैं। यह पत्रिका उन भावनाओं, विचारों और अनुभूतियों की अभिव्यक्ति है, जो शिक्षकों के हृदय में पलती हैं और साहित्य के रूप में साकार होती हैं।

ऐसी पत्रिकाएँ शिक्षा को केवल पुस्तकों की परिधि में नहीं बाँधतीं, बल्कि सोच, अभिव्यक्ति और संवेदना को विस्तार देती हैं। यह प्रशंसनीय है कि हमारे शिक्षक अपनी व्यस्त दिनचर्या के साथ-साथ सृजनात्मक साहित्य के माध्यम से समाज को दिशा देने का कार्य कर रहे हैं।

मैं “पद्यपंकज” पत्रिका से जुड़े सभी शिक्षकों, संपादक मंडल और रचनाकारों को इस पुनीत कार्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ। यह पत्रिका निरंतर पल्लवित और पुष्पित होती रहे, यही मेरी कामना है।

डॉ. स्नेहाशीष दास

विभागाध्यक्ष,
विद्यालयी शिक्षा विभाग
राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद, बिहार

संपादकीय

प्रिय साथियों,

स्वतंत्रता दिवस आते ही मन में तिरंगे के रंगों के साथ उन अनगिनत चेहरों की स्मृतियाँ भी उभर आती हैं, जिन्होंने अपने त्याग और संघर्ष से हमें आज़ादी की खुली हवा दी। यह दिन केवल उत्सव का नहीं, बल्कि ठहरकर यह सोचने का भी अवसर है कि हमने इस स्वतंत्रता को कितना सार्थक बनाया है।

हमारे लिए स्वतंत्रता का अर्थ केवल अपने विचार रखने की आज़ादी नहीं, बल्कि दूसरों के विचारों का सम्मान करना, सीखने की स्वतंत्रता को बढ़ावा देना और अपने समाज के प्रति जिम्मेदार बनना भी है।

एक शिक्षक के रूप में हमारी जिम्मेदारी और भी बड़ी है। हम जिन नन्हे मनों को आकार दे रहे हैं, उन्हीं में आने वाले भारत की तस्वीर छिपी है। यदि उनमें प्रश्न पूछने का साहस, सपने देखने की उड़ान और सही के साथ खड़े होने का विवेक पैदा कर पाए, तो यही हमारी सबसे सुंदर देशसेवा होगी।

आइए, इस स्वतंत्रता दिवस पर हम अपने भीतर एक छोटा-सा संकल्प जगाएँ, ज्ञान बाँटेंगे, संवेदना बढ़ाएँगे और अपने कर्मों से देश को बेहतर बनाने में अपना योगदान देंगे।

क्योंकि स्वतंत्रता हमें मिली है,
लेकिन उसे सुंदर बनाए रखना हमारी साझा जिम्मेदारी है।
इसी आत्मीय भावना के साथ
आप सभी को स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

अनुपमा प्रियदर्शिनी

राजकीय उत्क्रमित मध्य विद्यालय दूधहन ,
रघुनाथपुर, सीवान

अनुक्रमणिका

नित्य राष्ट्र-हित रक्त बहेगा
राम किशोर पाठक 08

हमारा तिरंगा
आशीष अंबर 09

हर घर तिरंगा
कार्तिक कुमार 10

स्वतंत्रता का अमर प्रण
उमेश कुमार सिन्हा 11

आजादी का दिव्य पर्व महान
बेबी अर्चना 12
.

फिर पन्द्रह अगस्त आया
रुचिका 13

देश के युवक
रंजना कुमारी 14

स्वतंत्रता से प्यार
रत्ना प्रिया 15

स्वाधीनता
एम० एस० हुसैन "कैमूरी" 16

स्वतंत्रता
भवानंद सिंह 17

नित्य राष्ट्र-हित रक्त बहेगा

सर्व श्रेष्ठ वह भक्ति लहेगा।
नित्य राष्ट्र-हित रक्त बहेगा।

शौर्य बोध अब गौन नहीं हो।
वीर-धीर तुम मौन नहीं हो।।
शत्रु शोध पर, कौन? नहीं हो।
राष्ट्र-भक्ति कद बौन नहीं हो।।
प्राण हान कर शीश ढहेगा।
नित्य राष्ट्र-हित रक्त बहेगा।।०१।।

मातृभूमि पर जान लुटाएँ।
भेद-भाव सब शीघ्र भुलाएँ।।
नींद त्याग कर शस्त्र उठाएँ।
देश-द्रोह जड़ मूल मिटाएँ।।
घात-घात प्रतिघात कहेगा।
नित्य राष्ट्र-हित रक्त बहेगा।।०२।।

प्रेम-भाव पथ दिव्य हमारा।
दीन-हीन सह सौम्य सहारा।।
देवलोक तक छोड़ किनारा।
देश-प्रेम हिय आज पुकारा।।
दुष्ट-दृष्टि भय-मुक्त रहेगा?
नित्य राष्ट्र-हित रक्त बहेगा।।०३।।

राम किशोर पाठक
सियारामपुर, पालीगंज, पटना,
बिहार।

हमारा तिरंगा

सब मिलकर संकल्प करें,
हर घर में तिरंगा लहराये।
आन , बान और शान हमारी ,
चारों दिशाओं में यह फहराये।

सबसे सुन्दर, सबसे अच्छा।
दुनिया में सबसे न्यारा है।
सब मिलकर संकल्प करें,
घर – घर में तिरंगा लहराना है।

भारत की यह गौरव गाया,
हर दिल की ये चाहत है।
तीन रंग का सुंदर सा यह ,
देता दिल को राहत है।

सबसे ऊँचा झंडा अपना,
देखो कैसे शान से फहराये।
पूरब से पश्चिम दिशा तक,
और उत्तर से दक्षिण तक लहराये।

हमें है गौरव अपने ध्वज पर,
यह हमारे देश का स्वभिमान।
इसकी रक्षा को कृत संकल्पित,
देना है हमें सबको यह ज्ञान।

आशीष अम्बर
उत्क्रमित मध्य विद्यालय धनुषी
प्रखंड – केवटी जिला – दरभंगा

हर घर तिरंगा

हर घर तिरंगा लहराए, भारत माँ मुस्काए,
जन-जन के मन में देशभक्ति, दीप नया जल जाए।

केसरिया त्याग सिखाए, साहस की पहचान,
श्वेत रंग दे शांति-संदेश, सत्य बने सम्मान।

हरा रंग खुशहाली लाए, धरती का श्रृंगार,
नीला चक्र निरंतर बोले—चलते रहो अपार।

सीमा पर जो वीर खड़े हैं, उनको नमन हमारा,
उनके त्याग और बलिदानों से, रोशन देश हमारा।

गाँधी, भगत, सुभाष की धरती, वीरों का सम्मान,
रानी लक्ष्मीबाई की गाथा, बढ़ाए देश की शान।

जाति-धर्म का भेद मिटाकर, एक बने परिवार,
भारत माँ के लाल सभी हम, भारत अपना प्यार।

गाँव-गाँव और नगर-नगर में, तिरंगा फहराएँ,
घर-घर इसकी आन बचाएँ, मिलकर शपथ उठाएँ।

नन्हे-मुन्ने हाथों में जब, तिरंगा लहराए,
देख तिरंगे की यह शोभा, हर भारतवासी मुस्काए।

स्वच्छ रखें हम अपना भारत, निर्मल हो हर द्वार,
शिक्षा, सेवा, योग और श्रम से, बढ़े देश का प्यार।

हर घर तिरंगा, हर मन तिरंगा, यही हमारा मान,
भारत माँ की जय-जय बोले, गूँजे हिंदुस्तान।

तिरंगा केवल ध्वज नहीं है, यह भारत की शान,
इसके खातिर न्योछावर हैं, वीरों के प्राण।

आओ मिलकर आज सजाएँ, अपना घर-आँगन
प्यारा,
हर घर तिरंगा फहराकर कहें—
भारत देश हमारा!

कार्तिक कुमार
राष्ट्रीय योग प्रशिक्षक एवं शिक्षक
मध्य विद्यालय कटरमाला, गोरौल, वैशाली
पता: ग्राम/पोस्ट – मझौली पचदही, भाया सिलौत,
जिला – मुजफ्फरपुर, बिहार

स्वतंत्रता का अमर प्रण

स्वतंत्रता-दिवस आया है,
हर आँगन उल्लास समाया है।
केसरिया, श्वेत, हरा तिरंगा,
गर्व से नभ में लहराया है।

ज्यों ही यह पावन दिन आता,
मन इतिहास में खो जाता।
लहूलुहान उन वीरों का चेहरा,
स्मृति-पटल पर छा जाता।

त्याग, तपस्या, बलिदानों की
अमर कहानी बोल उठी;
भारत माँ की पावन मिट्टी
वीरों की जय बोल उठी।

अंग्रेजों की क्रूर हुकूमत
जिसने भारत को ललकारा,
वीरों ने भी प्रण कर डाला—
“अब होगा भारत हमारा।”

“वन्दे मातरम्!” का गूँजता स्वर,
“भारत माता की जय!” पुकार;
हँसते-हँसते फाँसी चूमी,
कर दिया जीवन राष्ट्र पर वार।

माँ ने बेटे न्योछावर किए,
बहनों ने खोए अपने भाई;
सुहाग लुटाकर वीरांगनाओं ने
भारत-माता की लाज बचाई।

अंतिम क्षण में वीरों ने भी
बस इतना संदेश सुनाया—
“हम रहें न रहें, ऐ साथियो,
भारत अमर सदा रह जाए।”

काला पानी, जेल, यातनाएँ,
डिगा न उनका दृढ़ विश्वास;
स्वराज्य-दीप जलाने निकले,
बनकर जन-जन की आस।

गाँधी का सत्य-अहिंसा पथ,
सुभाष का अदम्य हुंकार;
राजेन्द्र बाबू की सादगी,
शास्त्री जी का ऊँचा विचार।

विवेकानन्द की अमर वाणी
आज भी देती है संदेश—
“उठो, जागो, आगे बढ़ो,
सर्वप्रथम महान हो देश।”

आओ ऐसा प्रण दोहराएँ,
वीरों का सम्मान करें;
पूर्वजों की अमर विरासत का
जीवन भर अभिमान करें।

झूठी शान नहीं अपनाएँ,
सत्य-पथ से न कभी हटें;
जब तक तन में साँस रहे,
भारत-माता हेतु जिएँ।

हर घर तिरंगा लहराए,
हर हृदय राष्ट्रगान बने;
विश्व-पटल पर भारत माता
शांति और सम्मान बने।

जय हिन्द! जय भारत!
वन्दे मातरम्!

उमेश कुमार सिन्हा
डिसेंट एकेडमी वाया स्कूल
तुलसीपथ लाला पुल रघुनाथपुर
अंचल-ब्रह्मपुर (श्री ब्रह्मेश्वरनाथ धाम)
जिला – बक्सर

आजादी का दिव्य पर्व महान

है हिन्द-सिंध अपना हिय सनातन
आजादी का यह दिव्य पर्व महान
गुलामी- कलुषित- कालिमा का
आज ही के दिन हुआ अवसान
सदियों फैली पीड़ित मानवता
गुलामी की बेड़ियों में थी जनता
अंग्रेजी दमन से मिली तब मुक्ति
एकजुट हुई जब भारत की जनता
अखंड हो गया खंडित भारत
मिली अपनी संपूर्ण पहचान
गुलामी- कलुषित- कालिमा का
आज ही के दिन हुआ अवसान
रक्त की जाने कितनी धार बही
कितनी माँओं की सूनी कोख हुई
माँ भारती की अस्मिता की खातिर
जाने कितनी ही सेना कुर्बान हुई
हिंदु – मुस्लिम और सिख- ईसाई
सब भारत माता की हैं पहचान
गुलामी- कलुषित -कालिमा का
आज ही के दिन हुआ अवसान
यह गाँधी के सपनों का भारत
लोकहित निज-अस्तित्व समाहित

करते अहर्निश हम राष्ट्र वंदना
बैर -भाव से न हो कोई आहत
हो सर्वधर्म- समभाव- समन्वय
मातृभूमि का करें मिल यशोगान
गुलामी- कलुषित- कालिमा का
आज ही के दिन हुआ अवसान
हो सौम्य उज्जवल धवल छवि
जन- जन की हो पहचान यही
है मातृभूमि से ही अपना गौरव
सिर मुकुट शोभित है हिमगिरि
गंगा की पावन जलधारा संग
मस्तक कर लें हम दिव्यमान
गुलामी-कलुषित- कालिमा का
आज के ही दिन हुआ अवसान
रक्षक बन न पाएँ अब भक्षक
विश्वबंधुत्व का आओ लें शपथ
स्वार्थरहित निस्वार्थ भाव संग
एकदूजे संग चलें राह सतपथ
अपने हिस्से के मिले आसमां में
हर बहन-बेटियों का हो सम्मान
गुलामी-कलुषित-कालिमा का
आज ही के दिन हुआ अवसान।

बेबी अर्चना
मध्य विद्यालय कुआड़ी
कुर्साकांटा, अररिया

फिर पन्द्रह अगस्त आया

फिर पन्द्रह अगस्त
देश प्रेम का परचम लहराया।
जय हिंद के नारों से
गुंजयमान हुआ भारतवर्ष
भारत देश महान कहलाया।

केवल ध्वज फहराकर
अपने कर्तव्यों के निर्वहन की
बात हुई
देश के हितों की बात कहाँ
किसी को समझ आया।

स्वार्थ की राजनीति में
हर दल और हर नेता लगे हैं।
कुर्सी के लिए कितने खेल
बनते और बिगड़ते हैं।
राष्ट्र की बात सबसे पिछले पन्ने पर
अपनी बारी की प्रतीक्षारत नजर आया।

सफेदपोश भ्रष्टाचार
देश को दीमक की तरह खोखला कर रहा
हमारा देश दुश्मन से पहले
अपने देश के गद्दारों से लड़ रहा
80वाँ स्वतंत्रता दिवस
तंत्र के सामने बेबस नजर आया।

धर्म के नाम पर होती है लड़ाई
भूख हड़ताल ,अनशन,
धरना प्रदर्शन हर जगह देता दिखाई।
गरीबों के होते शोषण से
व्यवस्था भी कहाँ कभी छुटकारा पाया।

फिर पन्द्रह अगस्त आया
हर तरह जय हिंद का परचम लहराया।

रूचिका
राजकीयकृत प्राथमिक विद्यालय
कुरमौली गुठनी सिवान बिहार

देश के युवक

जागो देश की युवक,
नई क्रांति का आगाज करो।
नए भारत का सृजन ,
अब तुम्हारे हाथों में है,
कुछ तो विचार करो।
हे ,भारत के युवकों कुछ तो विचार करो,
नई उमंग को फिर से अपने अंदर आगाज करो।
विवेकानंद ने युवाओं में वायु सा
वेग बहाकर,
अपना परचम विदेश में लहराया था
उनके जैसा बनकर तुम भी ,
आसमान में सूर्य- सा प्रकाश करो।
अपनी नई ऊर्जा, नई सोच
शौर्य बुध्दि, विवेक से,
निर्माण परिवर्तन सृजन विकास करो ,
ऐसी ना विकास की
पेड़, पर्वत जंगल, का ही नाश करो,
प्रकृति से न खिलवाड़ करो,
नए भारत का निर्माण करो।।
दृढ़ संकल्प, नूतन स्वप्न, नई सोच,
नई ऊर्जा लेकर शंखनाद करो।
ना रहे देश में अज्ञानता, अशिक्षा ,अन्याय भ्रष्टाचार
,अत्याचार, कहीं भी,
उठो युवक दृढ़ संकल्प करो,
गरीबी दरिद्रता तस्करी को
जड़ से नाश करो। ।
उठो, जागो ,तब तक मत रुको,
जब तक देश से गरीबी,अशिक्षा
महंगाई, भ्रष्टाचार ,अत्याचार,
गरीबी, शोषण, सांप्रदायिकता,
न मिट जाए,
तब तक तुम प्रयत्न करो।।
जय हिंद , जय भारत, जय युवा शक्ति।।

रंजना कुमारी
शिक्षिका,(JUHS khamhar)
विभूतिपुर समस्तीपुर, बिहार

स्वतंत्रता से प्यार

अखिल विश्व के हर प्राणी को , स्वतंत्रता से प्यार है ,
पराधीनता में सुख नहीं , यह जानता संसार है ।

स्वतंत्र हैं हम परतंत्र नहीं , हमारा गणतंत्र सही ,
जनतंत्र है तो गणतंत्र है , स्वराष्ट्र का मंत्र यही ,
पराधीनता का जीवन तो , निरर्थक है , बेकार है ,
अखिल विश्व के हर प्राणी को , स्वतंत्रता से प्यार है ,

आसमान में उड़ते पंछी , मुक्त होकर गाते हैं ,
ऊँची उड़ान भरते हैं हवाओं से टकराते हैं ,
लाख सुविधा हो पिंजरे में बंधन से इंकार है ।
अखिल विश्व के हर प्राणी को , स्वतंत्रता से प्यार है ।

प्रताप ने परिजनों संग , घास की रोटी खाई ,
हल्दीघाटी में मुगलों को , हार की धूल चटाई ,
सुख-सुविधाओं से वंचित को , गुलामी नहीं स्वीकार है ।
अखिल विश्व के हर प्राणी को , स्वतंत्रता से प्यार है ।

स्वतंत्रता की बलिवेदी पर , लाखों ने दी कुर्बानी ,
फाँसी चढ़े , गोलियाँ खाई , लिख गए अमर कहानी ,
कष्ट , त्याग , जीवनोत्सर्ग ही वीरों के उद्गार हैं ।
अखिल विश्व के हर प्राणी को , स्वतंत्रता से प्यार है ।

पुरुषार्थ करने वाले कभी , परिश्रम से नहीं डरते ,
मेहनती , अभ्यासी बनकर , गर्व से सदा हैं भरते ,
स्वावलंबी होना ही जीवन का सफल उपचार है ।
अखिल विश्व के हर प्राणी को स्वतंत्रता से प्यार है

अंतिम क्षण तक संघर्ष ही , जीवन की पहचान है ,
आलस्य , अपकर्ष , शिथिलता , मानवता का अपमान है ,
राष्ट्रहित में लगे न जीवन , वह जीवन बेकार है ।
अखिल विश्व के हर प्राणी को ,स्वतंत्रता से प्यार है ।

रत्ना प्रिया – शिक्षिका (11 – 12)
उच्च माध्यमिक विद्यालय माधोपुर
चंडी ,नालंदा

स्वाधीनता

जब घोषणा हुई स्वाधीनता का
हर मन प्रफुल्लित हो आया था ।

खुशियों से झूमे उठे भारतवासी
सैकड़ों वर्षों बाद ये पल आया था ।

पराधीन था जब भारत अंग्रेजी जंजालों
वीर सपूतों के खून ने उबाल आया था ।

गांधी , आजाद , बोस आदि के दंभ ने
अंग्रेजों को भारत से मार भगाया था।

जग गण से नारों से गूंज उठी थी गलियां
जहां सैकड़ो वर्षों से सन्नाटा छाया था।

उस पल को देखने को मन था व्याकुल
जब लाल किला पर तिरंगा लहराया था ।

एम० एस० हुसैन "कैमूरी"
शिक्षक सह युवा कवि
उत्क्रमित मध्य विद्यालय
छोटका कटरा
मोहनियां कैमूर

स्वतंत्रता

स्वतंत्रता के पावन,
अवसर हम सब,
उल्लास पूर्वक और
खुशी से मनाते हैं।

याद करेंगे बीरों को,
जिसने दी कुर्बानी है,
हम सब मिलकर,
झंड़ा फहराते हैं।

कभी मिटने न देंगे,
देश की आन व शान,
श्रद्धा और सम्मान से,
वचन निभाते हैं।

सबसे प्यारा अपना,
हिन्दुस्तान हमारा है,
देश पर मिटने की,
प्रण दोहराते हैं।

भवानंद सिंह
(शिक्षक)
मध्य विद्यालय मधुलता
रानीगंज, अररिया

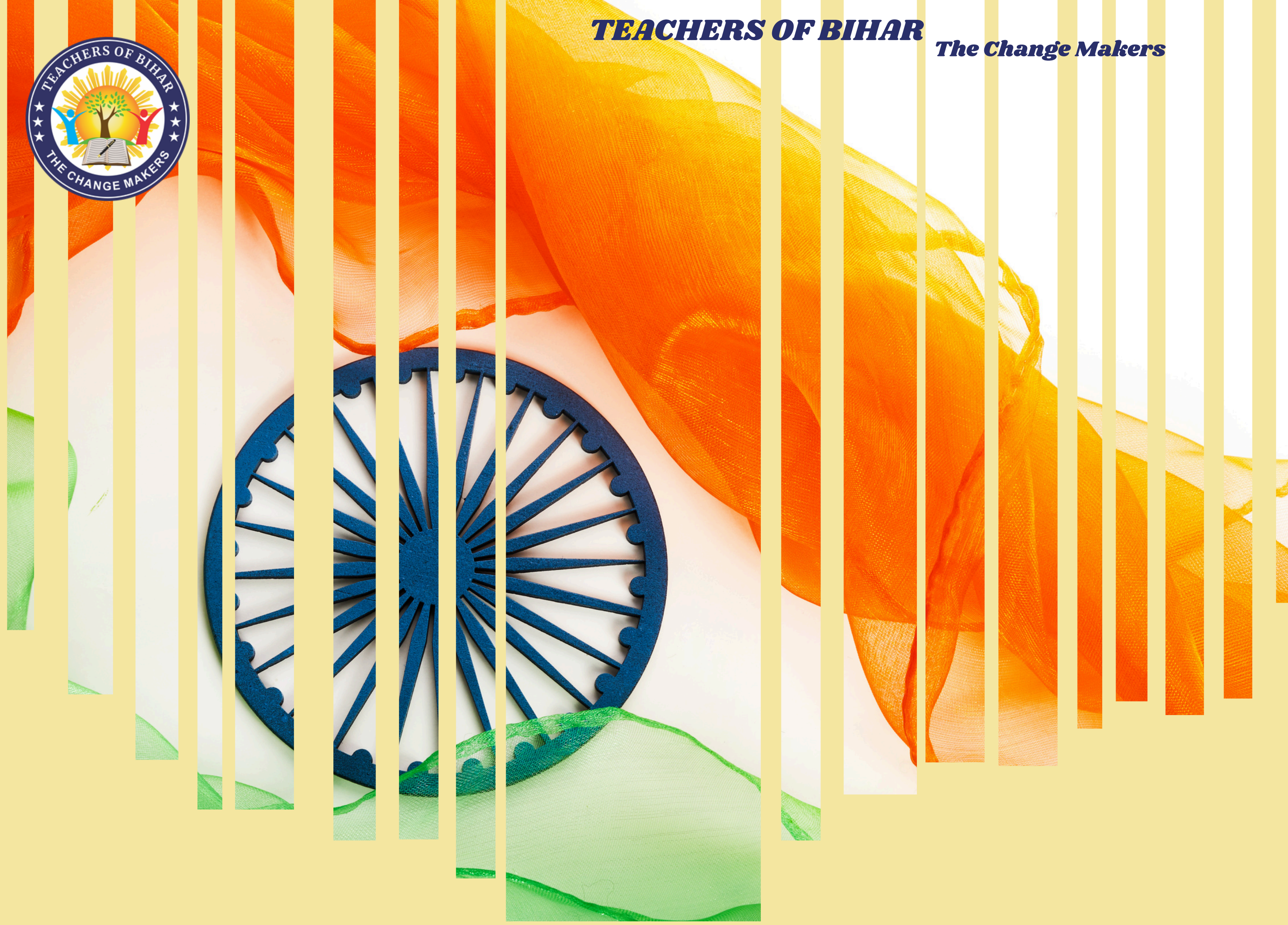

पद्यपंकज

आपके द्वारा दिया गया अमूल्य समय हमारे लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। यदि आपके पास कोई सुझाव हो, तो कृपया हमें अवगत कराएं, जिससे हम और भी बेहतर कार्य कर सकें।

Reg. No. BR/2025/0487469

Teachers Of Bihar

क्या आप बिहार के सरकारी विद्यालय के शिक्षक हैं ? आपको अपनी रचना भी प्रकाशित करनी है ? नीचे दिए गए वेबसाइट, ईमेल एवं व्हाट्सप्प के माध्यम से जुड़े |

writers.teachersofbihar@gmail.com
padyapankaj.teachersofbihar.org
+91 7250818080 | +91 9650233010

पद्यपंकज के सभी अंकों को पढ़ने के लिए QR Code को स्कैन करें